MA-I

Sem-II

Project

2019-20

Scanned by TapScanner

नाव :- फलके कविता अंबादास
कॉलेजचे नाव :- आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, सोनई
कक्षा :- M.A. Hindi (I)
विषय :- हिंदी
हजेरी क्र. :- 203

प्रोजेक्ट :- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी-
को अध्ययन अथवा बोलने में
समस्या

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

INDEX

Sr. No	Title	Date	Remarks
1.	प्रस्तावना		
2.	उद्देश्य		
3.	अध्ययन संबंधी आदतों का अर्थ		
4	विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार		
5.	भाषा सीखने एवं सिखाने की विभिन्न दृष्टीयाँ		
6.	विद्यार्थीओ को आनेवाली दिक्कते भाषा बोलने में		
7.	मूल्यांकन और आकलन		
8.	माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौत्तिया ~~हस~~		
9.	हिंदी भाषा में सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता व महत्त्व		
10)	निष्कर्ष		

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

प्रस्तावना :-

विद्यार्थी के लिए माध्यमिक शिक्षा उसके जीवन का महत्वपूर्ण काल है। हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थी लगभग सभी विषयों का अध्ययन करता है एवं सामान्य जानकारी प्राप्त करता है, जिसके फलस्वरूप बोलने के लिए अध्ययन संबंधी आदतों का निर्माण होता है। अध्ययन की अच्छी आदतें ही अच्छे चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करती है, जिससे विद्यार्थी का जीवन संयमित, अनुशासित और सरल बन जाता है।

विद्यालय में बच्चों को शिक्षा के अलावा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के द्वारा सामूहिक क्रिया का भी विकास होता है। विद्यालय में विद्यार्थी के मानसिक विकास के साथ-साथ शारिरीक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यवसायिक विकास भी होता है। जिसके कारण विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायता होती है। हिंदी भाषा शिक्षण के इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में प्रथम भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए प्रभावी शिक्षक तैयार होना चाहिए।

Scanned by TapScanner

उद्देश्य :-

1) हिंदी भाषा शिक्षण में अपेक्षित गुणों एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।
2) हिंदी भाषा शिक्षण में पुस्तकालय के महत्व को समझ सकेंगे।
3) हिंदी भाषा प्रयोगशाला का हिंदी शिक्षण में प्रयोग कर सकेंगे।
4) शिक्षा बच्चों की रुचि उसके स्वभाव और उसके मानसिक विकास के आधार पर होनी चाहिए।
5) श्रव्य - दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण कर सकेंगे।

Scanned by TapScanner

शिक्षक जब बच्चो को पढाते है, तब उन्होंने उनसे हिंदी में ही बात करनी चाहिए। शिक्षक जब प्रश्न पूछे है, तो बच्चोने हिंदी में ही उत्तर देना चाहिए। शिक्षक जब कोई कविता अथवा गदय या पदय पढ़ाते है तो उन्होंने उनसे उसका अर्थ हिंदी में ही छात्रों को समझाना चाहिए न की उसका अर्थ मराठी में होना चाहिए। जब शिक्षक उसका अर्थ हिंदी में बताते है तो बच्चों के कानों में उस हिंदी के शब्द पड़ते है। न की मराठी में बताना चाहिए। शिक्षक और छात्रों में जो भी संवाद होता है वह सब हिंदी में होना चाहिए न की मराठी में।

हिंदी का जब विषय पढ़ने में आता है तो उसका और उस समय में हिंदी में ही बात की जानी चाहिए। इसका अच्छी तरह से प्रभाव छात्रों में दिखाई देगा। अगर हिंदी के लेक्चर में मराठी में बातचीत हुई तो लड़कों के समझ में कुछ भी नहीं आएगा और उन्हें हिंदी में बातचीत करने में अड़चन आ जाएगी।

इस सबके लिए शिक्षकोने बच्चो से हिंदी में बोलने के लिए कहना चाहिए और उन्हें एक सबजेक्ट देकर उनसे उस पर बातचीत करनी चाहिए और छात्र - छात्र में भी हिंदी बोलना चाहिए। ऐसा होगा तो हिंदी बोलना सबके लिए सरल होगा न की समस्या होगी। हिंदी आज कल तो बहुत सरल भाषा है जो की जहाँ भी देखो तो हिंदी में ही उसका उपयोग होता है। आज टि.व्ही, मोबाईल सब तरह हिंदी ही प्रचलित है इसलिए हिंदी में बातचीत करना हमारे लिए आवश्यक बात है।

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

अध्ययन संबंधी आदतों का अर्थ -

मानव जीवन में आदतों का विशेष स्थान होता है। वास्तव में आदत मूलरूप में एक मानसिक गुण है। बालक के अर्जित व्यवहार या सीखे हुए व्यवहार में आदतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब बालक किसी क्रिया या कार्य को अपनी इच्छा से जान-बूझ कर बार-बार दोहराता है तब वह क्रिया कुछ समय बाद बिना प्रयास के स्वतः संचालित होने लगती है। बार-बार दोहराये गये ऐच्छिक कार्यों के परिणाम को आदत कहते हैं। दैनिक जीवन के अधिकांश अध्ययन संबंधी कार्य आदतों के ही फलस्वरूप होते हैं। जैसे - पढ़ने का समय, लिखने का समय, उठने का समय, सोने का समय, मनोरंजन का समय, अच्छी पुस्तकों का संग्रह करना, समय-सारणी बनाकर पढ़ना, प्रतिदिन स्कूल जाना आदि एक विशेष आदत के अनुसार होता है। अच्छी आदतें व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में सहायक होती हैं। जैसी आदत होगी वैसी ही व्यवहार होगा।

व्यवहार व्यक्तित्व का दर्पण होता है। उसी से बालक के व्यक्तित्व की पहचान भी होती है। अच्छी आदतें बालकों में नैतिक और चारित्रिक गुणों का विकास करती हैं। आदत के कारण ही बालक में सहनशीलता, प्रेम, दया, सहानुभूति, परोपकार जैसे सद्गुणों का विकास होता है। बालकों की अध्ययन संबंधी आदतों का उसकी भावी सफलता में घनिष्ठ संबंध है। बालक छः घंटे अध्यापक के संपर्क में तथा अठारह घंटे अभिभावक के संपर्क में रहता है। अतः विद्यार्थी के भविष्य निर्माण में अध्यापक और अभिभावक ही योगदान कर सकते हैं। अध्ययन संबंधी आदतों में बालकों की वे सभी क्रियाओं में आती हैं जो उसकी व्यक्तित्व के शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सर्वांगीण विकास को प्रभावित करती है।

Scanned by TapScanner

विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार :-

21 वी शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नती कर सकती है जो रचनात्मक एवं काल्पनिकता विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। बच्चों को यदि वास्तविक दुनिया का आत्मविश्वास से सामना करने की शिक्षा दी जाए तो भारत में इस जनसांख्यिकिय हिस्से की संपूर्ण सामर्थ्य का अपने लिये उपयोग करने की क्षमता है।

संधारणीय विकास लक्ष्य 2030 को अंगीकार करने के बाद ध्यान माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक गुणवत्ता के साथ निष्पक्षता पर स्थानांतरित हो गया है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात में गुणवत्ता के महत्व पर इन शब्दों में जोर दिया था। अब तक सरकार का ध्यान देश के शिक्षा के प्रसार पर था किंतु अब वक्त आ गया है कि ध्यान शिक्षा की गुणवत्ता पर दिया जाए। अब सरकार को स्कूलिंग की बजाय गुणवत्ता पर और ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर ने भी घोषणा कि थी कि देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार सर्वोच्च प्राथमिकता होगा। स्कूलिंग की बजाय ज्ञानार्जन पर ध्यान स्थानांतरित करने का अर्थ इनपुट से नतीजों पर ध्यान देना होगा। विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर को सुधारने के लिए केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारें नवीन व्यापक दृष्टीकोणों एवं रण नितियों को बना रहे हैं।

Scanned by TapScanner

भाषा सीखने एवं सिखाने की विभिन्न दृष्टियाँ :-

1) भाषा अर्जन :-

भाषा अर्जन एक अवचेतन प्रक्रिया है। इसमें बालक के सीखने की प्रक्रिया व्याकरणीय नियमों से पूर्णतया अनभिज्ञ रहती है और यह प्रथम भाषा अर्जित करता है। भाषा के अर्जन की प्रक्रिया में बालक को एक प्राकृतिक संप्रेषण के स्रोत की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी इसी के माध्यम से भाषा सीख लेते अर्थात बालक वातावरण और लोगों के बीच अंतक्रिया के माध्यम से भाषा को अर्जित करता है। इसमें बालक सक्रिया भूमिका निभाता है।

2) भाषा अधिगम :-

भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है और मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। कोई भी मनुष्य अकेले जीवन नही गुजर सकता है और वह एक ही समय में एक या एक से अधिक समाज या सामाजिक समूहों का सदस्य होता है। इसके साथ-साथ वह अपने भाषा पर निर्भर रहता है। हर भाषा का अपना ही अलग समाज होता है जहाँ वह प्रयुक्त होती है।

भाषा अधिगम एक चेतन प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नियमबद्ध होती है अर्थात भाषा व्याकरणीय नियमों से सिखाई जाती है। इसमें बालक के सीखने की प्रक्रिया से पूरी तरह अनभिज्ञ रहता है। भाषा को सीखने के लिए भिन्न-भिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। भाषा की लेखन प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

3) समग्र भाषा दृष्टिकोण -

बालक भाषा के अंश को न सीखकर उसके समग्र रूप को सीखता है। अर्थात व्याकरण की पुस्तक में दिए गए रूप जैसे - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि को न सीखकर वह समग्र रूप से भाषा को अर्जन एवं अधिगम करता है। शिक्षक कविता या कहानी का यह अंश बच्चों को तीन - चार बार सुनाए और फीर उनसे लिखने को कहे। इस तरह हम कह सकते है कि समग्र भाषा द्दष्टि में बालक भाषा के अंश को न सीखकर उसके समग्र रूप को सीखता है।

4) रचनात्मक दृष्टीकोण -

भाषा - सीखने - सिखाने की रचनात्मक दृष्टी एक ऐसी रणनीति है जिसमें पूर्वज्ञान अवस्थाओं और कौशल का प्रयोग होता है। भाषा - सिखने - सिखाने की इस रचनात्मक दृष्टी के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सूचना के आधार पर नई किस्म की समझ विकसित करता है।

Scanned by TapScanner

विद्यार्थीओं को आनेवाली दिक्कते भाषा बोलने में

जब शिक्षक ने कुछ विद्यार्थीओं से दीवार प
लगे वर्णमाला चार्ट को पढ़ने के लिए कहा थो उ
उस भाषा में अड़चन आने लगी थी। जब पह
बार स्कूल में आए तो हिन्दी के बहुत कम शब्द
बारे में पता था। मैंने देखा की कुछ विद्यार्थी
कक्षा की दीवार पर लगे हिंदी वर्णमाल चार्ट पर
गए चित्रों द्वारा दर्शाए गए शब्दों को गलत त
से बता रहे थे। उन्होंने 'हल' (हल के लिए हि
भाषा शब्द) की बजाय 'नायल' (हल के लिए हो
भाषा का शब्द) कहा। जब उनसे शिक्षक ने पू
की यह कौन सा अक्षर है, तो विद्यार्थीयों ने मु
कहा कि यह 'न' है जो कि 'हल' के लिए
हिंदी भाषा के पहले अक्षर 'ह' की बजाय हो
भाषा में 'हल' का पहला अक्षर था।

शिक्षक ने जब बताया की हिंदी अक्षरों के
नामों और उच्चारणों को ठीक से सिखाने के लि
मुझे अपने विद्यार्थिओं की सहायता करनी होगी
उसी की वजह से शिक्षक ने एक वर्णमाला चार्ट तैया
किया। इस वजह से हम सब इस तरीके से हिंदी
के वर्णमाला के अक्षरों के उच्चारणों को ज्यादा आसानी
से सीख पाए। उसके बाद उन्होंने हमें हिंदी के विभिन्न
चित्रित शब्दों को भी सीखने में उनकी सहायता की।
इससे हमें अपने हिंदी शब्द संग्रह को तैयार करने
में सहायता मिली।

शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान
एक संकुल के शिक्षकों के साथ बहुभाषिता के सिद्धांत
पर चर्चा हो रही थी। बहुभाषित के महत्व व

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

व सिद्धान्त को बेहतर समझने उद्देश्य से प्रतिभागियों के साथ एक गतिविधि के साथ शुरुआत की गई। सभागार में बैठे शिक्षक साथियों से पूछा गया कि इस कक्षा में कितनी भाषाएँ जानने वाले लोग है? कौन-कौन साथी किन-किन भाषाओं को बोलना, लिखना पढ़ना और समझना जानते है उनके बारे में बताएं।

शिक्षक साथियों ने बोलना शुरु किया, प्रतिक्रियाएं जो अपेक्षित थी कुछ हद तक उसी अनुरूप प्राप्त हुई। लगभग छह से सात सामान्य भाषाओं जैसे हिंदी अंग्रेजी, छत्तीसगढ़ी, पंजाबी, उर्दू, मराठी आदि भाषाओं की सूची ब्लैक बोर्ड पर तैयार थी। परंतु मेरे अपने अनुभव न जाने क्यु उकसा रहे थे कि नहीं इस कक्षा में कुछ और भाषाओं को जानने व समझने वाले साथी मौजूद है। मैंने तीन-चार बार यह कहा कि क्या हम इस सूची को अंतिम सूची मान लें? क्या हमारे बिच इन भाषाओं के अतिरिक्त कोई और भी भाषा जानने वाले साथी मौजूद नहीं है? प्रतिभागियों की भाषा एक स्वर में प्रतिक्रिया आई कि हाँ, सर हम लोग बस इतनी भाषाओं को ही जानते है।

लेकीन अन्य शिक्षको ने उन सर से कुमारी भाषा में कुछ लिखने का निवेदन किया उन्होंने लिखा -

स्कुल जावद [स्कुल जाना है]
पानी पियबा [पानी पिना है]

कुडुख भाषा में -

बरा नाम स्कुल कालोत [मैं स्कुल जाऊंगा]
एन अव्वा मोखदना [मैं रोटी खाऊंगा]
नाम कुदा कालोत [हम घुमने जाएंगे]
निगहे एन्देर नामे [आपका नाम क्या है]

Page No.
Date

मूल्यांकन और आकलन :-

एक छात्र की अध्ययन प्रगति का आकलन करना शिक्षक की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक है। कक्षा में छात्रों के नियमित और निरंतर मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों और माता-पिता को प्रतिक्रिया देना। शिक्षक को प्रतिक्रिया और बच्चों के बीच अध्ययन समस्याओं के समाधान के लिए हल निकालना है। अध्ययन मूल्याकन तंत्र पर आधारित एक शैक्षिक वातावरण वाली कक्षा में ये निश्चित किया जा सकता है कि शिक्षक और छात्र दोनों ही सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे है।

छात्र अपने अध्ययन में कितने प्रगति कर रहे है और इसके साथ-साथ शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है इसके लिए मूल्यांकर पर आधारित कक्षा के साथ व्यापक स्तर पर उपलब्धी सर्वेक्षण को जानने की भी आवश्यकता होती है। सरकार ने एक प्रक्रिया की पहल की है जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन किया जाएगा। इसमें सरकारी विद्यालयों, सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय और निजी विद्यालय शामिल होगे। इस सर्वेक्षण का प्राथमिक प्रयोजन निर्धारित अध्ययन लक्ष्यों की तुलना में छात्रों के प्रदर्शन को समझने के लिए विद्यालयों को एक अवसर प्रदान करना है। इस तरह के सर्वेक्षण से शिक्षण परिणामों को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक परिवेश तैयार होगा।

शिक्षको और छात्राओं की प्रतिक्रियाएं शिघ्रता से मिलेगी ताकि वे शिक्षण अंतरालो के समाधान के

Scanned by TapScanner

लिए समग्र से कारवाई कर सके, एक समय-वाधि के भीतर छात्रों के प्रदर्शन को समझ सके और शैक्षिक व्यवस्था की स्थिति के बारे में पाठ्यक्रम निर्माताओं, शीर्षक प्रशिक्षण संस्थानों शैक्षिक प्रशासकों को एक व्यवस्थित प्रतिक्रिया प्रदान कर सके। यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक है।

अध्यापक :-

जहाँ बच्चे विद्यालयी शिक्षा के केंद्र होते है बच्चों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान योजनाओं दोनों में अध्यापकों के जरूरत आधारित व्यावसायिक विकास के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन प्रयासों को पूरा करने के लिए ऑनलाइन कार्यक्रमों की योजना भी है।

जरूरत है कि विद्यालई तंत्र प्रतिभाशाली युवाओं को अध्यापन के क्षेत्र में लाए, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद ने चार वर्षीय समेकित बीए - बीएड एवं बीएससी - बीएड कार्यक्रमों की शुरुआत की है एवं श्रेष्ठ विद्यालई तंत्र के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में ईमानदारी से रुचि रखने वालों का ध्यान आकर्षित करने के लिए इन कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

शिक्षा का अधिकार कानून के मुताबिक 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए पहली से आठवीं तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। इसके बाद बच्चे माध्यमिक शिक्षा की तरफ आगे बढ़ते हैं। यानी 14-18 वर्ष तक के छात्र-छात्राएँ माध्यमिक शिक्षा के दायरे में आते हैं। भारत में माध्यमिक शिक्षा को बढावा देने के लिए राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) का गठन किया है। जो विभिन्न राज्यों में माध्यमिक शिक्षा को दिशा देने व वित्तिय संसाधन जुटाने में मदद करता है। जैसे उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा अभियान UPMSA काम कर रहा है।

माध्यमिक शिक्षा का जिक्र आते ही बोर्ड परिक्षाओं का जिक्र हो आता है। इसके बाद नकल की कहानियां भी याद आ जाती हैं। बोर्ड परिक्षाओं के परिणाम जारी होने के समय छात्र-छात्राओं के तनाव की खबरें भी हम अक्सर पढ़ते सुनते हैं। दरअसल माध्यमिक स्तर की शिक्षा कॉलेज की तैयारी का एंट्री प्वाइंट होती है। यहां से बच्चे भविष्य में करियर चुनाव को ध्यान में रखते हुए विषयों का चुनाव करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं-

1) छात्र-शिक्षक अनुपात का संतुलित न होना:-

बहुत से स्कूल ऐसे हैं जहाँ छात्रों के अनुपात में शिक्षक नहीं हैं। इस कारण से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पाती और पढ़ाई के मामले में बाकी क्षेत्रों के बच्चों से पीछे रह जाते हैं।

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

२) विषयवार शिक्षकों का अभाव:-
भारत में बहुत से सरकारी स्कूल ऐसे है जहाँ पर विभिन्न विषयों के शिक्षक नही है, इसके कारण भी बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।

३) पुस्तकालय की दयनीय स्थिति:-
माध्यमिक स्तर पर बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करने पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। स्कूल में ढंग के किताबे नही होती।

4) कोचिंग सेंटर पर बढ़ती निर्भरता:-
शिक्षक बच्चों पर ध्यान अच्छी तरह से न देने के कारण से भी कोचिंग सेंटर पर छात्रों की निर्भरता तेजी से बढ़ी है।

5) कॉलेज की तैयारी के लिए कितनी उपयोगी:-
माध्यमिक शिक्षा विश्वविद्यालय में दाखिले का इंट्री प्वाइंट है। यही से छात्रो के कॉलेज जाने की शुरुआत होती है। जहाँ वे ज्यादा विस्तृत दुनिया के साथ आपसी संवाद और सीखने-सिखाने का मौका हासिल करते है। माध्यमिक शिक्षा को कॉलेज की तैयारी की दृष्टी से ज्यादा उपयोगी बनाने की जरूरत है। ताकि बच्चों में विश्लेषण की क्षमता का विकास हो सके और वह किसी सवाल को अपने परिवेश से जोड़कर उसका जवाब दे सके।

Scanned by TapScanner

हिंदी शिक्षण की दृष्टी से विद्यालय स्तर पर प्रत्येक कक्षा के शिक्षण कार्य में शिक्षक हिंदी भाषा संबंधी विभिन्न पाठें जैसे पदय शिक्षण, गदय शिक्षण, प्रश्न पत्र का निर्माण, व्याकरण शिक्षण, निबंध शिक्षण और रचना शिक्षण इत्यादी के शिक्षण में जिन सहायक शिक्षण सामग्री कहा जायेगा। हिंदी शिक्षण के विदयार्थियों को सहायक सामग्री के प्रयोग की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए।

हिंदी भाषा शिक्षण में सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता व महत्त्व :-

1) श्रव्य - दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण
श्रव्य-दृश्य सामग्री को निम्न तौर पर विभक्त किया जा सकता है।

श्रव्य साधन	दृश्य साधन	श्रव्य-दृश्य साधन
रेडिओ	नमूने	टेलीविजन
टेप रिकॉर्डर	चित्र	नाटक
सीडि प्लेयर	मॉडल	कम्प्युटर
स्मार्ट फोन	मानचित्र	प्रोजेक्टर

2) विदयार्थियों को अनुभव प्रदान करते है -
शिक्षण सहायक सामग्री से विदयार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। काम करके सीखना या अपने आप को अधिगम का हिस्सा मानते है। प्रत्यक्ष अनुभव के विषय सार्थक और सरल बन जाता है। विदयार्थियों की भागीदारी शिक्षण में प्रक्रिया में बढ़ती है।

Scanned by TapScanner

Page No.
Date

3) विद्यार्थी सक्रीय रहता है -

अधिकांश शिक्षण सहायक सामग्रीयों में कुछ न कुछ करने का अवसर रहता है। श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विकासित करते हुए उनमें सोच पैदा करती है जिसमें विद्यार्थी ~~सुखद~~ सुखद और स्वाभाविक वातावरण में पढकर अपने आप को सक्रिय रखता है।

निष्कर्ष

हिंदी में बोलना शुरू हुआ तो छात्र आपोआप भी छात्र हिंदी बोलना सीख जाते हैं। हिंदी भाषा ~~दिखाव~~ में कुछ सवाल पूछ कर उनको हिंदी बोलने को प्रोत्साहित करना। छात्रों के साथ हिंदी में बात करनी चाहिए। हिंदी के चित्र दिखाकर उसका वर्णन छात्रों को समझाना चाहिए।

Scanned by TapScanner

मुळा एज्युकेशन सोसायटीचे,
कला, वाणिज्य आणि विज्ञान कॉलेज
सोनई

ता. नेवासा, जि. अ. नगर.

"माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को हिंदी बोलने में आनेवाली समस्या"

विद्यार्थ्यांचे नाव

कु. गुंजाळ सिमा तुकाराम

मार्गदर्शक

प्रा.डॉ. चौधरे एस. बी.
प्रा. देशमुख एस. ए.

शैक्षणिक वर्ष

M.A. I (Semi II) Hindi

२०१९-२०२०

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned by TapScanner